।। अर्श आशिक विनय ।।

सत्य साँईं की चरण बन्दगी बारम्बार ।। सत्य साँईं की दया से अर्श आशिक विनय भाषते सतगुरु साँईं महाआनन्द शाह दाता की चरण बन्दगी बारम्बार ।। सतगुरु साँईं अबरन शाह दाता की चरण बन्दगी बारम्बार।। सतगुरु साँईं अनुरुप शाह दाता की चरण बन्दगी बारम्बार ।। सतगुरु साँईं महरम शाह दाता की चरण बन्दगी बारम्बार ।। सतगुरु साँईं अनमोल शाह दाता की दाया से माता श्रीमती राजदेई एवं पिता श्री बाबा रामप्रसाद सिंह के द्वारा सतगुरु के चरणों में सादर समर्पित ।। सत्य साँईं की चरण बन्दगी बारम्बार ।। अर्श आशिक विनय ।।१।। शोक संदेह मिटि जाय आनीश को, ईश की शरण जो शीश नावै ।। सदा सत्संग के रंग में जो रहै, नाम की आस करि सो जुड़ावै ।। नितै गुरु गुफा जो सुरति गुंजा करै, नाद अनहद तो समुझि पावै ।। भँवर ज्यौं पुष्प तजि जात अंतै नहीं, बास की आस तेहि पास भावै ।। महाआनन्द लखु मुश्क मोहन, ईश जो सकल आनीश के शीश छावै ।।२।। तत्व के माँझ नि:तत्व बासा करै, मिलै

गुरुदेव तो भेद पावै ।। नाम आराधना सुरति सुर साधना, मिटै भव कार जौ उजियार पावै ।। आप से आपना देख दीदार, भर अगम औ निगम जेहि भेद गावै ।। महाआनन्द सुख सिन्धु मोहन, मणि दीद बा दीद नैनन देखावै ।।३।। गुरु समरथ दीन दयाल द्रवो, दियो भक्ति शिरोमणि मोहि लखाई ।। जासो रीझत दीन दयाल प्रभु, अघ धोय के आप में लेत मिलाई।। जाके जाचक सन्त अजाचक भे, फिर दूसर द्वार जोहारै न जाई ।। महाआनन्द सोइ मग में बिचरौ, जासो मोहन मूरति नैन दिखाई ।।४।। सत्य साँईं का नाम अकार जपौ, मैं मकार के मारग धावत नाहीं ।। जैसे पंक्षी पपीहा सेवाती ररै, सरिता भरा नीर सो भावत नाहीं।। ऐसी टेक से एक की चेरी बनी, दुसरे मुख फेरि निहारत नाहीं ।। महाआनन्द आशिक मोहन सो, जो मोंहि रहेव सब के मग माहीं ।।५।। तक त्रिकूट का घाट, बाट सब सन्त बताई ।। कर त्रिवेनी स्नान, मंजु मन धाम सिधाई ।। लखि साँईं अनुरुप, रुप बिन झलक देखाई ।। महाआनन्द मोहन अलख झलक, नैनन दरशाई ।।६।। आसन पदम लगाय, सुरति ब्रह्माण्ड चढावै ।। लखै नाम निवार्ण, ब्रह्म जो सकल समावै ।। मिटै जीव का भूल,

मूल जो देखन पावै ।। महाआनन्द मोहन अलख, पलक पर झलक देखावै।।७।। सुरति सुमिरन करै सोई जन, जो गुरु मारग पाया है ।। इंगला पिंगला सोधि सुष्मना, शून्य शिखर चढ़ि जाया है ।। लखत लखत लखि परै, अलख पति जो सर्वज्ञ समाया है ।। महाआनन्द मोहन मणि मूरति, दम दम दरश दिखाया है ।।८।। साँईं नाम से नेह करौ अँखिया, एक सन्त सुजान कहा समुझाई ।। नौ मारग बंद करौ, दसवें घर सुरति देव चढ़ाई ।। सोहंग शब्द सुनौ चित दै, चितवौ ब्रह्मांण्ड चकोर की नांई ।। महाआनन्द मोहन मुश्क मणी, परतीत की रीति से देत देखााई ।।९।। षट दर्शन सत्संग, सन्त से पावै भाई ।। निरखै सुरति संभारि, रब्बि रफ परै दिखाई।। बिहंसै पुष्प अनूप, मधुप मन रहै लोभाई ।। महाआनन्द मोहन अलख झलक, नैनन दरशाई ।।१०।। सत्य साँईं साँईं रटत, कटत तन मन की व्याधा ।। सुरति चढ़ी ब्रह्मांण्ड, झरै जँह अनहद बाजा ।। निरखत नाम अनूप, रुप बिन शोभित साजा ।। महाआनन्द आनन्द हुआ निरखि, मोहन सिरताजा ।।११।। साँईं दीनदयाल दया करिये, दर्शन देव ऐगुन मेटि हमारो ।। बिछड़ेव जब से प्रभु चरणन से, जग योनि अनेकन जन्मत

हारो।। अँगिया विषया मल छाय रह्यो, सोइ धोवन हार है नाम तिहारो ।। महाआनन्द द्वारे पुकारत है, साँईं मोहन नैनन कोर निहारो ।।१२।। जिनकी रसना साँईं नाम जपै, तिनको जम देखि डेरावत हैं ।। भव ताप सिराइ गयी तन की, त्रिवेणी में हंस नहावत हैं ।। जहाँ सेत कली एक फूली सदा, शशि पूरा प्रकाश देखावत हैं ।। महाआनन्द चित्त चकोर किये, साँईं मोहन दरश देखावत हैं ।।१३।। सत्य साँईं होउ दयाल, शरण तुम्हरी सिर वारा ।। तजि हित्त कुटुम्ब परिवार, आस तुम्हरा ही जोहारा ।। तुम दीनन के सिरताज, दया निधि नाम तुम्हारा ।। महाआनन्द को दर्शन दीजै, समदर्शी मोहन प्राण पियारा ।।१४।। साँईं जीव के पीव कहावत हो, कहैं सन्त सुजान औ वेद घनेरो ।। तौ पंकज प्रीति करै, तो तरै भव सागर नाम के टेरो ।। अक्षर शूल मिटै सबहीं, निःअक्षर नाम प्रताप के नेरो ।। साँईं मोहन तुम सब लायक हो, महाआनन्द को कर लेव चरणन चेरो ।।१५।। शरणागति साँईं परा तुम्हरी, तुम राखि लेहु लजिया हमरी ।। त्रैताप अपार महाबल है, जाकी त्रास डरै सगरी नगरी ।। सोई ताप नशावन नाम हरी, तुम्हरा गुण गाये से पार तरी ।। महाआनन्द की

विनती येतरी, गहिये मोहन बहियाँ हमरी।।१६।। शिष्य जाचक द्वारे पुकारत है, सतगुरु भरिये भण्डार हमारो ।। देव भक्ति अमोल सदा अविचल, यह माँगत हौ कर दोनों पसारो ।। तुम्ह सिन्धु अगाध भरा संगम, मोहि बुन्द के उद्र भरो ततकारो ।। महाआनन्द की अभिलाष यही, नित चाहत मोहन दरश तुम्हारो ।।१७।। सत्य नाम सतिसार सदा दीदार है, जानत सन्त सुजान, जाहि गुरु खोला गुप्त दुआर है ।। निशु दिन निरखौ चरण पीव को, उल्टी दृष्टि निहार हो ।। महाआनन्द मोहन मणि चीन्हा, तुरन्त हंस भौ पार हो ।।१८।। सतगुरु फौरम सुनिये विनती, तुम्हरे चरणन की बनी अरधंगी ।। निशु वासर आस लगी मुझको, मिलिहौ मोहिं साँईं सदा सरभंगी ।। अहेव दीनन बन्धु सदा सुख कंद, तू जाचक हार की काटत बन्दी ।। महाआनन्द के हिया टेर लगी, दर्शन देव मोहन पिउ जिया संगी ।।१९।। साँईं मोहन बंशी बजावत हो, सुनती बिरही सखिया मन मारो ।। इंगला पिंगला सुर संगम कै, सुषमनि सर सुरति मञ्जन कारो ।। जहाँ बाजत ताल अनेकन थी, कहि जात नहीं अकहा गति प्यारो ।। महाआनन्द मूरति मोहन की, निरखौ निशु वासर चित्त सम्हारौ ।।२०।। साँईं

मोहन मोहि रहेव सगरेव, जैसे पुष्प कली उर वास रमेउ है ।। जल में थल में ब्रह्माण्डन में, तिहुँ लोक में ज्योति बिराज रहेव है ।। जिनके गुरु मारग इष्ट परेव, तिनके नैना छवि छाय रहेव है ।। महाआनन्द के मन मोहेउ प्रभु, तुम मोहन श्याम कहाय रहेउ है ।।२१।। मन केतिक बार कही तुमसे, छल छाँड़ि के साँईं का नाम पुकारो ।। जन कारण देर नहीं जिनको, सुनि आरत भरम नेवारन हारो ।। ऐसे नाम से आस मनाओ सदा, तुम या तन काहे को खोवत सारो ।। महाआनन्द आनन्द पाइहौ तबै, जबहीं साँईं मोहन नाम पुकारो ।।२२।। गुरु के रज अञ्जन लोचन दै, निरखै नित साँईं की ऊँची अंटारी ।। जैसे चन्द्र चकोर निहारत है, भरि रैन नहीं चित्त अंतै टारी ।। ऐसी प्रीति लगावै सोई हंसा, उर अंन्दर मांझ सदा उजियारी ।। महाआनन्द के हिया आनन्द भै, साँईं मोहन के संग लागी है यारी ।।२३।। समदर्शी पिया घट वारे दिया, निशु वाशर ज्योति प्रकाश रही है ।। झलकै गुरु मारग के बिचवा, मानो भानु की किरण प्रकाश भई है ।। अहै शब्द सरुप सदा उदया, जामें सन्त सुजान लोभान रही है ।। महाआनन्द मग निरखौ चित्त दै, सबही उर मोहन मूल

मई है ।।२४।। धनि मात पिता सोई हैं जग में, जिनके हरि भक्त लियो अवतारो ।। प्रभु पावक रुप जग पावन पिउ, तिनकी शरणागति त्राहि पुकारो।। जरि के अघ ऐगुण खाक भई, तब गन्धि मिटी चौरासी के फेरो ।। महाआनन्द सोई जन ब्रह्म गती, जोई मोहन पुरुष के नाम पुकारो ।।२५।। जिनकी भगिया उदया जग में, सोई नाम से नेह लगावत हैं ।। गुरु मारग में मन लिप्त किऐ, नित सुरति गगन चढ़ावत हैं ।। जैसे चन्द्र चकोर की प्रीति सही चित्त जोरि अमी रस पावत हैं ।। महाआनन्द मारग झीन लखौ, जहाँ मोहन पिया दरशावत हैं ।।२६।। पार ब्रह्म की सुन सहिजानी, जाहि जोगि जन ध्यान धरै ।। सेत सरुप निःअक्षर साँईं, सर्व मयी में बास करै ।। लखि पावै कोई हंस जवाहिर, जो गुरु मारग चित्त अड़ै ।। महाआनन्द मिले जेहिं मोहन, आवा गमन से सो उबरै ।।२७।। यहि आतम में परमातम है, सत संगति में सुधरै सोई जानी ।। गुरु के रज अंञ्जन नैन देहे, तब सूझि परै उर अंतर्यामी ।। कहैं सन्त सुजान औ वेद पुराण, अहै सर्वज्ञ में ज्योति समानी ।। महाआनन्द मोहन मोहिं संघा, जैसे पुष्प कली वसिया लपटानी ।।२८।। बानी शब्द

बिचार गुरुन का, भक्ति मूल ठहरावोरी ।। मानुष तन सुमिरन की घरिया, बार बार नहिं पावोरी ।। अगम अगाध नाम सतगुरु का, भजि भजि भरम छोड़ावोरी ।। महाआनन्द मोहन मणि मूरति, नैनन उर दर्शावोरी ।।२९।। रसना तुम से समुझाई कही, सत्य साँई नाम पुकारि रहो रे ।। भव बन्धन फन्दन व्यापै नहिं, सतगुरु सरनाय मनाय रहो रे ।। श्रुति वेद पुराण पुकारि कहैं, क्षण नाम जपौ ताको मुक्ति लहो रे ।। महाआनन्द काहे को देर कारौ, मोहन चरणन चित्त जोरि रहो रे ।।३०।। गुरु मारग में बिचरौ हंसा, तो मिटै भरम धुन्ध होय उजियारो ।। लखि पावै नाम कृपाल धनी, जाको वेद पुराण पुकारत हारो ।। अकहा कहौ कैसे के गाये चुकै, भरपूर सदा सत नाम अकारो ।। महाआनन्द मूरति मोहन की, निशु वासर सोहत नैन मंझारो ।।३१।। देखत बनै कहा नहिं जावै, सत्य नाम की छवि न्यारी ।। चढ़ि गई सुरति सैल के ऊपर, स्थिर होय आसन मारी ।। अजपा जाप आप सुधि भूली, लखि पुरुष चरण कि उजियारी ।। महाआनन्द सन्त के मारग, मुश्क मोहन भे दीदारी ।।३२।। वन्दना करत गुरु देव के चरणारि विन्द, जिनके प्रसाद सत्संग उर

आयो है।। वर्णत जेहिं सिध्दि शेष शम्भू गौरी गणेश, पावत सुख धाम सुयश तिहुँ पुर छायो है ।। गुरु को उपदेश भेष रावण औ राम लेत, सन्त पन्थ श्रुति सुजस नेति नेति गायो है ।। कहा है आनन्द शाह सेवहु गुरु चरण धाय, मिलैं साँईं मोहन जो सकल शीश छायो है ।।३३।। साँईं नाम सजीवन जीवन जीव हो, पीव तुम्हीं पति के रखवैया ।। जो जन आरत भे जग में, हम कान सुना तुम भरम टरैया ।। कहैं सन्त सुजान औ वेद पुरान, तुम्हीं प्रति पालक दायक सैंया ।। महाआनन्द आरत बैन सुनो, साँईं मोहन वेगि गहौ मम बँहिया ।।३४।। सत्य पुरुष विशाला होउ दयाला, सुन विनती जन केरी ।। देव दरश कृपाला करौ निहाला, मम नमो नाथ कर जोरी ।। पुरवौ अभिलाषा सतगुरु दाता, गहि लेहु बाँह प्रभु मोरी।। महाआनन्द पुकारा सुन साँईं मोहन प्यारा, आरत हरौ प्रभु करौ न बेरी ।।३५।। सति पुरुष सतगुरु चरण वन्दौं, बार बार सिर नांइयाँ ।। जेहिं दरश भरमता जात मन की, पाप पुन्ज नसाइयाँ ।। लखि अलख अनभौ अनल साँईं, नल की मलै छोड़ाइंयाँ ।। महाआनन्द मोहन मुश्क मूरति, गुरु प्रताप कोउ पाइयाँ ।।३६।। मगन भयो मन मोर, घोर सुनि

अनहद बानी ।। गुरु मूरति की प्रीति, चित्त चकोर ज्यों तानी ।। यह मत युग चारिउ में सार कहा, सन्तन बहु बानी ।। महाआनन्द सोई बूझि हिया, मोहन मूरति अपने घट जानी ।।३७।। अलख आखंड प्रचंड प्रकाश है, झलक सो खलक औ पलक छाई ।। ईष्ट सारिष्ट सो जीव का पीव है, सन्त सुजान प्रमान गाई ।। सुरति के मथन सो रतन देखात है, भोर ज्यों भानु शोभा सुहाई ।। महाआनन्द आनन्द गुरु गैल में, मुश्क मोहन दीदार पाई ।।३८।। सर्व व्यापक ब्रह्म अलख अनाम, सदा शिष्य के सिर शोभित छाये ।। गुरु ज्ञान सलाका लगाय दियो, तबहीं दिव्य दृष्टि से देखन पाये ।। लखि परम प्रकाश उजास उदय, जेहिं आश्रम सन्त अनन्त समाये ।। महाआनन्द मोहन मुश्क मणी, सो धनी सब जीव के पीव कहाये ।।३९।। सुरति चढ़ि गइ ब्रह्माण्ड के खण्ड, जहाँ अलख अकार शोभा विराजै ।। सहस दल कमल विकसान छवि निरखि के, हुआ मन भृंग तेहि मध्य राजै ।। दिवस निशि नाम का धाम प्रकाश है, देखि जो हंस सो बंस बाजै ।। महाआनन्द साँई मोहन उजियार लखि ।। कोटि रबि चंन्द्र की आभा की साजै ।।४०।। रसना एक नाम सनेह बिना, परिहौ भवकूप

के अन्दर मारै ।। यम त्रास अनेकन देहैं तुम्है, जहाँ कोउ नहीं तोरे संगन मारे ।। उल्टा करिके तुम्हैं टाँगि देहैं, कहो मल मूत्र मला के भीतर मारे ।। महाआनन्द चेत करौ अबहीं, भजु मोहन पुरुष के ना मरिहौ रे ।।४१।। साँईं सुनो पुकार, दीन दुख दहन बिहारी ।। तुम्हरी बँहिया बलि आस, दास बहु भये सुखारी ।। प्रभु तुम अनाथ के नाथ, त्रास आरत की टारी ।। महाआनन्द अधम उध्दार, यार मोहन रसियारी ।।४२।। गुरु ज्ञान सलाका, दिया हिया का तिमिर नसाना ।। सूझा अलख उजास, भास बिजुरी की साना।। नित भवन भयो उजियार, भान मध्यान समाना ।। महाआनन्द मोहन नाम निरखि, मन मधुप लोभाना ।।४३।। चित्र कोट के शैल, सुरति दुर्बीन लगावै ।। लखै दसवाँ द्वार, दरश साँईं कै पावै ।। झलकै अलख अनूप, अजर आलेख कहावै ।। महाआनन्द मोहन नाम निरखि, नैना सुख पावै ।।४४।। मोहन मूल सदा सत संगम, ता संघ इश्क लगै भाई ।। गुरु मारग पर सुरति सम्हारै, चरणन झलकै नयन छाई ।। हाँ नाहीं के बीच बसेरो, कोई सन्त महरमी लखि पाई ।। महाआनन्द मोहन हैं समदर्शी, ज्यों पुष्प वासना लपटाई ।।४५।। सतगुरु

बँहिया कढियार, कहावै अगम संदेशा ।। सुमिरौ साँईं नाम, मिटै कलि काल कलेशा ।। रमि रह्यो शून्य आकार, गुनन को मिटै विशेषा ।। महाआनन्द मोहन नाम, निरखि अबरन दुर्बेषा ।।४६।। गंग जमुन के रंध, सुष्मना गंग बिराजै ।। जहाँ मुनि मंज्जन करै, वासना का मल माजै ।। निरखै अकार उजियार, चन्द्र रवि की छवि छाजै ।। महाआनन्द मोहन ईष्ट हंस की दृष्टि बिराजै ।।४७।। हरदम हरि सो नेह, देह की सुधि बिसारै ।। दूसर दुबिधा धोय, चरन पर चित्त सम्हारै ।। ज्यों सीपी स्वाती ररै, सरिता सुख विसराय।। महाआनन्द मोहन मणि निरखत, तन मन ताप नसाय ।।४८।। अलख अनूपम नाम, नयन भरि लखो सुजाना ।। उदय अस्त से रहित, अचल शोभित परमाना ।। दस चारि भुवन प्रकाश, भास बिजुरी की साना ।। महाआनन्द मोहन अलख, पलक औ खलक समाना ।।४९।। रसना साँईं मोहन नाम जपौ, सतगुरु सहिबाला दया कै दियो है ।। तुम्हरे हित कारन तारन को, सतनाम का मंत्र पढ़ाय दियो है ।। जाको शेष सुरेश जपै हृदय, शम्भू उर ध्यान लगाय रह्यो है ।। महाआनन्द साँईं रटौ रसना, जिन जीव के पीव कहाय

रहेव है ।।५०।। सतगुरु इष्ट सारिष्ट, नैन भरि लखो सुजाना ।। कमठ अण्ड को ख्याल ब्याल, ज्यों मणिहिं लोभाना ।। चंदा चातक येस नेह, देह की सुधि भुलाना ।। महाआनन्द मोहन दरश, देखि हंसा मुस्काना ।।५१।। गहिये मोहन बहियाँ हमरी, विनती करती कर जोरि रही है ।। अघ ऐगुण मेटि सकल तन की, अपनाय लेहु प्यारे चाह रही है ।। तुम दीनन के पतिराज अहेव, जो जाँचि रहेव ताकी बाँह गही है ।। महाआनन्द के घट बास करेउ, निशु वासर यह वर माँग रही है ।।५२।। चेत करो मन मीत, सुमिर सत नाम को ।। धरि गुरु मारग ध्यान, निरखि निर्वाण को ।। जाको जपत सन्त जन, शम्भु धरते ध्यान को ।। महाआनन्द मन मगन रहो, लखि मोहन पुरुष पुरान को ।।५३।। खोजि ले यार तू प्राण के पीव को, पास ही किये है पार ब्रह्मा डेरा।। ताहि का दरश दीदार जो करा चाहो, धाय के होय जाव सन्त चेरा ।। पाय के गुरु मंत्र तू अंत्र मा शोधि लेउ, आप में मिलै आपना यारा ।। महाआनन्द चित्त जोरि दर्शन करौ, सत्य के तख्त पावै मोहन पिउ प्यारा ।।५४।। सुरति चढ़ाये शीश, सच्चिदानंद निहारै ।। धरि गुरु मारग ध्यान, गगन पर

आसन मारै ।। करि तुरिया भवन निवास, बास जहाँ सन्त बिचारै ।। महाआनन्द मोहन सिन्धु बुन्द जिया तहाँ सिधारै ।।५५।। आरत हर हरि नाम, नाद औ वेद पुकारै ।। जो दास जोहारत आस, ताहि की भरम निवारै ।। करि लेव सखा निज आप, ताप तन मन की जारे ।। महाआनन्द मोहन सिंधु, बुंद के पोषण हारे ।।५६।। हे साँईं सिरताज, लाज के राखन हारे ।। अशरण दीन दयाल, दीन दुख भंजन हारे ।। प्रभु तुम अनाथ के नाथ, सन्त श्रुति कहत पुकारे।। महाआनन्द जोहत आस, दरश देव मोहन प्यारे ।।५७।। परे हंस की परम गति, जो शून्य गुफा सुरति जावै ।। पाँच पचीस तीन गुन विषया, ज्ञान खड्ग तिन पर नावै।। प्रेम पियाला पिउ मतवाला, इत उत सुरति नहीं जावै ।। महाआनन्द गुरु ज्ञान लखै, सो परे हंस मोहन पिउ पावै ।।५८।। सुरति गगन चढ़ाई के, नैनन साँईं हेर ।। त्रिकुटी महल आसन करौ, अजपा माला फेर ।। अजपा में मन लाय के, रहो शरण मा सोय ।। महाआनन्द साँईं मोहन मुक्ति मिलै, आवा गमन न होय ।।५९।। सतगुरु दीना नाथ, दया जन पर करो ।। हरो विषम भव शूल, कमल कर सिर धरो ।। अघ मोचन प्रभु का नाम, धाम

तुम्हरो बड़ो ।। महाआनन्द करत पुकार मुश्क मोहन द्वारा पड़ो ।।६०।। सत्य सांईं की दाया से अर्श आशिक विनय सम्पूर्ण ।। सत्य साँईं की चरण बन्दगी बारम्बार ।। बोलो हंसों श्री सतगुरु दीनदयाल की जय ।।